

मिट्टी की फुकार

दुनिया के सबसे अनोखा और सुंदर,
माँ प्रकृति फैलाती खुशी सबके अंदर।
पेड़ों से भरा दृआ है इसकी पारिधान,
मिट्टी, जलधि आदि है इसकी वरदान।

इस मिट्टी का भी है एक दास्तान,
जो रह गई है सालों से अनजान।
मिट्टी की सुगंध मिटाती सबकी थकान,
यही बनता अनेक जीवों के मकान।

किसान खेतों में अपने सपने बोते,
यही मिट्टी उनके मंजिल बनते।
यही से जीवन का अंत और आरंभ,
लोग अपने प्रतीक्षा का करते शुभारंभ।

इसमें ही जंगें लड़ी जाती है,
अनेक लोगों के आँसू बह जाती है।
यही मिट्टी है सबका अरमान
सैनिक देते अपना जीवन कुर्बान।



Item Code: 958

Participant Code: 047

प्रकृति आज कुछ कह रही है,
सालों से दबे सच को सह रही है।
बढ़ती आबादी ने पेड़ों को काटा,
जमीन को टुकड़े-टुकड़े में बाँटा।

फिर प्रकृति ने लिया अपना रूप भयानक,
पानी में डूब गई संसार अचानक।
बूफान ने उड़ाया सबका अहंकार,
देखा मनु ने अपनी की मटाकार।

मिट्टी आज रो रही है,
अपनी अस्तित्व खो पड़ी है।
अब तो सुनो मिट्टी की पुकार,
मत बनो अधर्म का शिकार।

उरते मनु पेड़-पौधे लगाने लगे,
क्रुपित धरा को शांत कराने लगे।
अपने गलती का सदसास हुआ,
इस पल से नई इंसान का जन्म हुआ।



64th Kerala Sahitya Akademi Kalolsavam, January 14 to 18, 2026, Thrissur

Item Code:

958

Participant Code:

047



चलो मिलकर कसम ये खाँदूँ,
धरती को हरियाली से सजावूँ।
मिट्टी आज कुछ कह रही है,
दर्द सहकर भी मुस्कान फैला रही है।

जब सूनी जागगी मिट्टी की फुकार
इनसान फिर से इनसान बन जागगी।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).